- शोधार्थी : नीरज कुमार मिश्र
- शोध-निर्देशक : डॉ. अनिल कुमार
- विभाग : हिन्दी

- विषय : अज्ञेय और मुक्तिबोध की सांस्कृतिक चेतना का तुलनात्मक अध्ययन

शोध-सार

अज्ञेय और मुक्तिबोध समकालीन होने के बावजूद एक रेखा के दो बिंदओं की तरह लगते हैं। अज्ञेय पर जहॉ व्यक्तिवादी और असामाजिक होने के आरोप लगाये जाते रहे हैं, अज्ञेय उनका हमेशा खंडन करते रहे। अज्ञेय अपने को रचना के साथ समाज के लिए जाग्रत रहने वाला नागरिक भी घोषित करते हैं। अज्ञेय की रचनाओं में व्यक्तिवाद नहीं बल्कि व्यक्तित्वाद लक्षित होता ह। ''नदी के द्वीप'' कविता में व्यक्ति और समाज का द्वंद्व देखा जा सकता है, यहॉ व्यक्तित्त्व का निर्माण होता है। इस द्वंद्व में व्यक्ति और समाज दोनों की स्वायत्ता बनी रहती है। वहीं मुक्तिबोध व्यक्तिवाद की जगह विस्तार के हिमायती हैं। उनके अनुसार कोई भी रचनाकार जन्म से साम्यवादी,व्यक्तिवादी और आध्यात्मवादी नहीं होता बल्कि जीवन के कटु अनुभव की धारा उन्हें उस ओर मोड़ देती है।

अज्ञेय और मुक्तिबोध ऐसे राष्ट्र की कल्पना करते है; जहॉ ऐसे लोग रहें जिन्होंने स्वाधीनता संग्राम में नि:स्वार्थ भाव से भाग लिया। दोनों की यह मान्यता थी कि आर्थिक प्रश्नों से टकराने बाद ही यह पूंजीवादी सत्ता जायेगी। अर्थसत्ता में भेदभाव तब तक चलता रहेगा जब तक शोषित वर्ग शक्ति सम्पन्न नहीं होगा। आज समाज हर तरफ शोषित-शोषक,समाजवाद-पूॅजीवाद के रूप में बॅटा नज़र आ रहा है। परोक्ष और अपरोक्ष रूप में इनमें से किसी एक का अंग बनता जा रहा है। मुक्तिबोध समाज की इसी सच्चाई को अंतरात्मा की पक्षधरता का नाम देते हैं और ऐतिहासिक तनावों को ही समाज परिवर्तन की प्रक्रिया के प्रमुख अंग मानते हैं। इसीलिए मुक्तिबोध नई कविता में तनाव और घिराव कादेखते हैं और उसे मध्यवर्ग की ऐसी कविता मानते हैं जिसने पुरानी श्रद्वा की जगह नई श्रद्वाएॅ पैदा नहीं की।

हमें इन दोनों रचनाकारों को विरोधी मानकर अध्ययन नहीं करना चाहिये बल्कि इन्हें एक साथ रखकर समेकित रूप से उनके साहित्य को देखने की जरूरत है। यह बात सही है कि अज्ञेय और मुक्तिबोध समकालीन होने के बावजूद अपने समय के प्रमुख रचनाकार हैं। दोनों का अपन दर्शन,अपने प्रतिमान और प्रतिबद्धताएं है। इसीलिए यह दोनों रेखा के दो ऐसे छोर हैं जो कभी तो मिलते प्रतीत होते हैं तो कभी अलग। मेरा प्रयास इनके साहित्य को समझकर उन्हें विरोधी रूप में नहीं बल्कि एक साथ रखकर देखने का है।